भारतीयपारंपरिकज्ञानपत्रिका
खंड 25(7), जुलाई 2026, पृ. 688-696
DOI:10.56042/ijtk.v25i7.25367

उत्तरी थाईलैंड के विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों में माइग्रेन सिरदर्द पर पारंपरिक थाई हर्बल योग याहोम थेप चित के प्रभावों का मूल्यांकन

साकेसुन[क], सारिन्थोर्न थुम्मायोट[ख], विकान्र्दा मैत्रीफेन[ग], पनत्थावान फोथोंग[ग] एवं पोंग्साटोन सिलांगिर्न[ग,*]

[क]पर्यावरण स्वास्थ्य विभाग, जनस्वास्थ्य संकाय, फयाओ विश्वविद्यालय, फयाओ 56000, थाईलैंड

[ख]शरीर रचना विज्ञान प्रभाग, चिकित्सा विज्ञान संकाय, फयाओ विश्वविद्यालय, फयाओ 56000, थाईलैंड

[ग]अनुप्रयुक्त थाई पारंपरिक चिकित्सा विभाग, जनस्वास्थ्य संकाय, फयाओ विश्वविद्यालय, फयाओ 56000, थाईलैंड

[*]ई-मेल: pongsaton.si@up.ac.th

प्राप्त: 08 नवम्बर 2025, संशोधित: 12 जून 2026, स्वीकृत: 03 जुलाई 2026

माइग्रेन सामान्य तंत्रिका संबंधी विकार है, जो व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता पर गहरा प्रभाव डालता है।इस अध्ययन के उद्देश्य थे (1) माइग्रेन के लक्षणों से संबंधित कारकों का निर्धारण करना तथा (2) उत्तरी थाईलैंड के विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों में पारंपरिक थाई हर्बल योग या होमथेपचित के माइग्रेन पर प्रभावों का मूल्यांकन करना। यहअध्ययन दो चरणों में किया गया। प्रथम चरण में 396 प्रतिभागियों पर अनुप्रस्थ अध्ययन किया गया, जिसके माध्यम से जनसांख्यिकीय, व्यवहारगत तथा स्वास्थ्य-संबंधी चरों और माइग्रेन के मध्य संबंधों का परीक्षण किया गया। द्वितीय चरण में चयनित प्रतिभागियों पर अर्ध-प्रायोगिक अध्ययन के माध्यम से याहोम थेप चित के माइग्रेन के लक्षणों पर प्रभावों का मूल्यांकन किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए काई-वर्ग परीक्षण, पियर्सन सहसंबंध विश्लेषण तथा लॉजिस्टिक प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग किया गया। प्रथम चरण में पाया गया कि माइग्रेन के लक्षण असामान्य शारीरिक द्रव्यमान सूचकांक (बीएमआई), आय, धूम्रपान की स्थिति, नींद की अवधि, ऊर्जा पेयों के सेवन, माइग्रेन के पारिवारिक इतिहास तथा तनाव ($p < 0.05$) से महत्वपूर्णरूप से संबद्ध थे। द्वितीय चरण में याहोम थेप चित प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों में नियंत्रण समूह की तुलना में माइग्रेन की आवृत्ति, अवधि, तीव्रता तथा माइग्रेन से संबंधित दिव्यांगता में उल्लेखनीय कमी देखी गई ($p < 0.001$)। ये निष्कर्ष संकेत करते हैं कि याहोम थेप चित माइग्रेन के लक्षणों को कम करने के लिए एक संभावित प्रभावी पूरक उपचार पद्धति हो सकता है। तथापि, इन निष्कर्षों की पुष्टि के लिए भविष्य में यादृच्छिक नियंत्रित नैदानिक परीक्षणों की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: हर्बल चिकित्सा, माइग्रेन दिव्यांगता आकलन मापनी (मिडास), अर्ध-प्रायोगिक अध्ययन, थाई पारंपरिक चिकित्सा, याहोम थेप चित।